द्वितीय अध्याय

"'पाँच आँगनों वाला घर' का वस्तुगत अनुशीलन"

द्वितीय अध्याय

"'पाँच आँगनों वाला घर' का वस्तुगत अनुशीलन"

❑ प्रास्ताविक

2.1 'वस्तुगत' शब्द का अर्थ और विवेचन

2.2 'पाँच आँगनों वाला घर' में वस्तु विभाजन

- 2.2.1 कथावस्तु का आरंभ क्षेत्र (1940-50)
- 2.2.2 पिढ़ियों का विवरण

2.3 'पाँच आँगनों वाला घर' की संरचना

- 2.3.1 गणेशजी वाला आँगन
- 2.3.2 बेलवाला आँगन
- 2.3.3 कालीजी वाला आँगन
- 2.3.4 हनुमानजी वाला आँगन
- 2.3.5 फटकावा वाला आँगन

2.4 संयुक्त परिवार

2.5 पारिवारिक वातावरण

2.6 'पाँच आँगनों वाला घर' का खुशहाल जीवन

2.7 कथावस्तु का मध्य

- 2.7.1 पारिवारिक विघटन का कारण
- 2.7.2 टूटता हुआ परिवार

2.8 स्त्रियों की भूमिका

- 2.8.1 जोगेश्वरी
- 2.8.2 शांतिदेवी

2.8.3 रम्मो

2.8.4 ओमी

2.8.5 कमलाबाई

2.8.6 नईकी चाची

2.9 बुजुर्गों के प्रति आस्था/अनास्था

2.10 कथावस्तु का अंतिम हिस्सा (1980-90) 'अन्धी गली'

2.10.1 पारिवारिक भेद, नई पीढ़ी में बेबनाव

2.10.2 पाश्चात्यों का अनुकरण

2.11 संयुक्त परिवार का अंत

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय

"'पाँच आँगनों वाला घर' का वस्तुगत अनुशीलन"

❑ प्रास्ताविक -

उपन्यास जीवन के बृहद् कथानक, समाज और मनुष्य के जीवन के प्रतिबिंब को प्रदर्शित एवं उद्घाटित करता है -

1. "उपन्यास काफी लम्बा लिखित गद्य कथा वृत्त है जिसमें पाठक लेखक की कल्पना द्वारा सृजित वास्तविक नवीन विश्व में आचरण करता है।

A Novel is the form of written prose narrative of considerable length involving the reader in an imagined real world, which is new because it has been created by the author."[1]

उपन्यास में महाकाव्य की तरह कई पात्र, कई कहानियाँ बहुतसे पात्रों की जीवन गाथाओं का चित्रण होता है। मनुष्य के रोजमर्रा की जिंदगी का हू-ब-हू दर्शन हमें उपन्यास में ही मिलता है। उपन्यास संबंधी डॉ. त्रिभुवनसिंह का मानना है - "उपन्यास आधुनिक समाज की विषमताओ, विचित्रताओं, समस्याओं तथा मानव की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को सफल अभिव्यक्ति देने के लिए अस्तित्व में आया है। जिसके लिए प्रबन्धकाव्य, महाकाव्य नीति नाटक तथा कहानिया असमर्थ सिद्ध हो चुकी थी।"[2] उपन्यास में मानव जीवन से संबंधित घटनाओं का मिश्रण होता है। उपन्यास विधा एक ऐसी विधा है, जिससे पाठक के मन में रोचकता निर्माण होती है। और पाठक मनोरंजन का आनंद लेते है। उपन्यास आम आदमियों से लेकर सभी वर्गों में उतना ही प्रिय है जितनी की कहानियाँ। उपन्यास में कहानियों के साथ साथ (Plot) कथावस्तु भी होती है। निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि 'कथावस्तु' स्थान परिवर्तन को अस्थायी रूप में स्वीकृत करती है। अर्थात एक सीमा के भीतर पात्र और घटनाओं को कुछ समय के लिए विभिन्न स्थानों तक ले जाया जा सकता है। इस प्रकार स्थान, विस्तार के लिए 'कथावस्तु' अस्थायी साधन है क्योंकि इसके लिए कोई निश्चित व्यवस्था नहीं होती।"[3]

कथावस्तु का स्थान उपन्यास स्थायी न होकर भी रीढ़ की हड्डी की तरह महत्वपूर्ण है। कथावस्तु और कहानी उपन्यास का महत्वपूर्ण अंग है, ''कथावस्तु और कथा अथवा कहानी का अन्तर स्पष्ट है। कहानी, कथावस्तु अथवा प्लाट (Plot) का आधार अवश्य प्रस्तुत करती है, पर कथावस्तु, कहानी की अपेक्षा एक उच्चस्तरीय साहित्यिक संगठन है। उपन्यासों के माध्यम से कही जानेवाली कहानी, अन्य कहानियों की भाँति सीधे-सादे ढंग से लेखक द्वारा ही नही कह दी जाती बल्कि उपन्यासकार को समुचित व्यवस्था करनी पडती है। उसका क्रम निर्धारण करना पड़ता है तथा आये हुए अन्य प्रसंगों के साथ उसकी संगति बैठानी पड़ती है।''[4]

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में मिश्र जी ने कथावस्तु को ऐतिहासिक स्वरुप दे दिया है। भारतीय परिवार में रहनेवाले सामन्ती परिवार की तीन पीढियों की जीवन गाथा को मिश्र जी ने प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास संबंधी डॉ. तिवारी के मत कुछ इस प्रकार है - ''पाँच आँगनों वाला घर में एक ओर तो यह घर है जो एक ऐसे वटवृक्ष के सान्निध्य में खड़ा है। जिसकी जड़े बहुत गहरे और बहुत दूर-दूर तक फैली हैं जो सब को अपनी और खिंचता है। सबकी सुविधा और सुरक्षा का ध्यान रखता है जो इस घर से दूर हैं वे भी उसके प्रेमल वातावरण को, उसकी भव्यता को, उसकी गरिमा को आदर और नम्रता से स्मरण करते हैं। उसकी स्मृति मात्र से स्फूर्ति और 'उल्लास' का बोध होते है। यह 'पाँच आँगनों वाला घर' संयुक्त परिवार की उदात्त संस्कृति को प्रतीकित करता है और छाया प्रदान करने वाला वटवृक्ष उस सनातन परम्परा का प्रतीक है, जो अपनी व्यापक उदारता, आत्मीयता, और मूल्यनिष्ठा के कारण सदैव समादृत होती रही है।''[5]

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास की कथावस्तु बृहत् और किसी महाकाव्य की भाँति प्रतीत होती है।

2.1 वस्तुगत शब्द का अर्थ और विवेचन :

वस्तुगत का अर्थ है - वस्तुनिष्ठ, कथागत अथवा कथावस्तु। कथावस्तु का अर्थ वस्तु विन्यास की तह्त भी लिया जाता है। कथावस्तु शरीर में आत्मा के समान होती है। इसलिए उपन्यास में कथावस्तु को प्रथम स्थान दिया है।

''कथानक या वस्तु कहानी या घटना संगठन मात्र नहीं है बल्कि सूक्ष्म विवेचन के कारण एक विशिष्ट पारिभाषिक शब्द बन गया है। जिसकी बहुविध रूपो में व्याख्या की गई है। कथावस्तु उपन्यास का प्राणतत्व है। जिस प्रकार यह जान सकना कठिन है कि प्राण शरीर के अवयव विशेष में उपस्थित हैं, उसी प्रकार कथावस्तु की ओर संकेत करना दुश्कर है किंतु इतना तो स्पष्ट है कि कथावस्तु सम्पूर्ण उपन्यास में व्याप्त रहती है। फलत: कथावस्तु, कथावस्तु संगठन मात्र न होकर घटनाओं के मध्य वह सूत्र है जो घटनाओंका अस्तित्व उपरिहार्य प्रतीत होता है। कथावस्तु वह तन्तु विशेष है जो उपन्यास में घटना, स्थिति, चरित्र, वातावरण, भाव विचार में, स्थूल या सूक्ष्म रूप से विद्यमान रहता है। अन्य तत्वों के समान योगदान में संतुलन एवं सामंजस्य बनाए रखता है।''[6]

घटनाओं के संयोजन, चरित्रों की सृष्टि, वातावरण के निर्माण, भाव या विचार उद्बोधन में उपस्थित रहता है।

उपन्यास में कथावस्तु का महत्त्व अधिक रहता है। इस उपन्यास का कथावस्तु की दृष्टि से वस्तुगत विवेचन उपन्यास के कथानक के अनुसार हो सकता है।

2.2 'पाँच आँगनों वाला घर में वस्तु विभाजन :

2.2.1 कथावस्तु का आरंभ - 'क्षेत्र' (1940-1950) -

'पाँच आँगनोंवाला घर' यह उपन्यास सन 1940 से 1990 तक की मध्यवर्गीय भारतीय पारिवारिक स्थिति को दर्शाता है। गोविंद मिश्रजी लिखित यह उपन्यास तीन भागों में विभाजित है। जिसके शीर्षक है - 'क्षेत्र', 'दीवारें', और 'अन्धी गली'

सन्नी के सारंगी से उपन्यास की शुरुआत होती है। उपन्यास के आरंभ में प्राकृतिक वर्णन मिश्र जी ने अत्यंत सुंदरता से किया है।

2.2.2 पीढ़ियों का विवरण -

मिश्र जी ने 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में करीब पाँच पीढ़ियों की जीवन गाथा को चित्रित किया है। पाँच पीढ़ियों के सदस्यों के नाम इस प्रकार हैं -

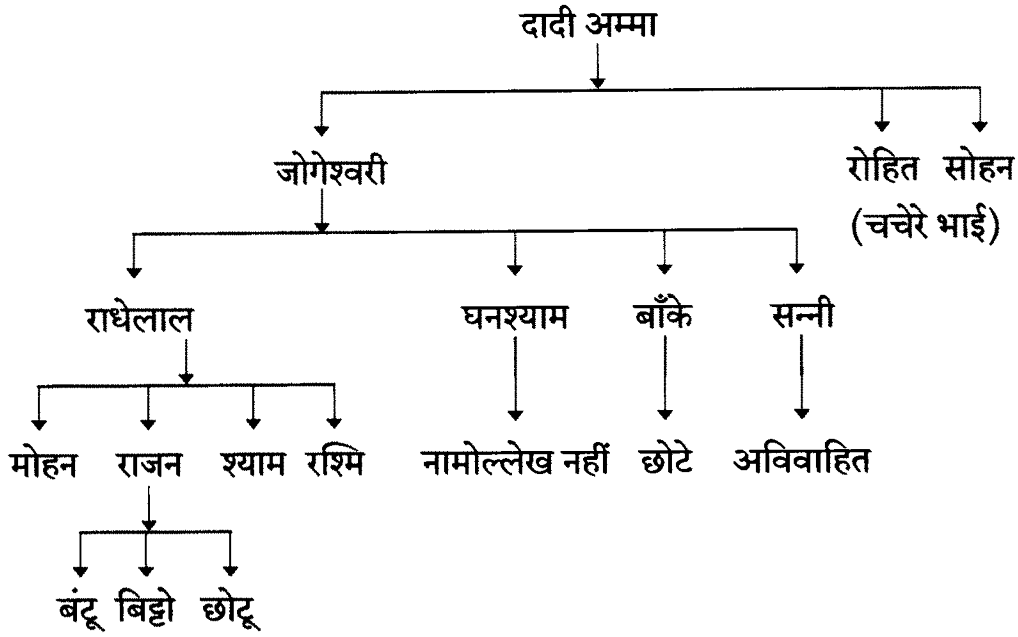

राधेलाल की पत्नी का नाम शांतिदेवी है। घनश्याम की पत्नी को रामनगर वाली कहा जाता है। जोगेश्वरी के तीसरे बेटे बाँके की पत्नी को शिवपुरी वाली तथा नइकी चाची कहा जाता है। सन्नी अविवाहित रहते है।

राधेलाल के चार बच्चों में से पहला मोहन, राजन, श्याम और रश्मि। मोहन की पत्नी का नाम ओमी है, राजन की पत्नी रम्मो है। राजन को तीन बच्चे हैं जिनके नाम बंटू, बिट्टो और छोटू हैं।

घनश्याम के बेटों या बेटी के नाम के बारे में कुछ उल्लेख नहीं दिखायी देता। बाँके के बेटे का नाम छोटे है।

पाँच आँगनों वाला घर में रहनेवाले सदस्यों में से उपर्युक्त सभी सदस्य महत्वपूर्ण दिखायी देते हैं, जिनके जीवन-चरित्र को मिश्र जी वर्णित करते हैं।

2.3 'पाँच आँगनों वाला घर' की संरचना :

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास की कथावस्तु का केंद्र बिन्दू है जिसकी संरचना पाँच आँगनों से की गई है। इसी पाँच आँगनों वाले घर में रहनेवाले लोगों की जीवन गाथा मिश्रजी ने लिखी है। कथावस्तु के निर्माण के लिए संरचना की दृष्टि से पाँच आँगनों वाला घर का पूरा स्वरूप आधारभूत हुआ है। इसी घर में कथानक घटित होता है और समय के बदलाव के साथ बदल जाता है। कथावस्तु की दृष्टि से 'पाँच आँगनों वाला घर' की संरचना की ओर ध्यान देना आवश्यक है।

2.3.1 **गणेशजी वाला आँगन -**

मुख्य दरवाजे से सटा बैठक रवाना। जो राधेलाल का कमरा था। उसके पीछे सबसे बड़ा आँगन जिसे गणेशजीवाला आँगन कहा जाता है।

2.3.2 **बेल वाला आँगन -**

बेल के कई पेड़ होने के कारण इसे बेलवाला आँगन कहा जाता था।

2.3.3 **कालीजी वाला आँगन -**

धार्मिक कार्यों के लिए बनाया हुआ बहु बेटियों के लिए काम आनेवाला यह आँगन था।

2.3.4 **हनुमानजी वाला आँगन -**

यहाँ रामलीला भाँडो के नाच आदि होते थें। इसी आँगन में सन्नी बच्चों के साथ खेलते और खेल-खेल में हनुमान चालीसा रटाते थें।

2.3.5 **फटकावा वाला आँगन -**

सबसे पीछे फाटक के पास होने के कारण इसे फटकावा वाला आँगन ऐसा कहा जाता था।[7]

'पाँच आँगनों वाले घर' की अंतर्गत संरचना अगले पृष्ठ पर ...

'पाँच आँगनोंवाला घर' की अंतर्गत संरचना

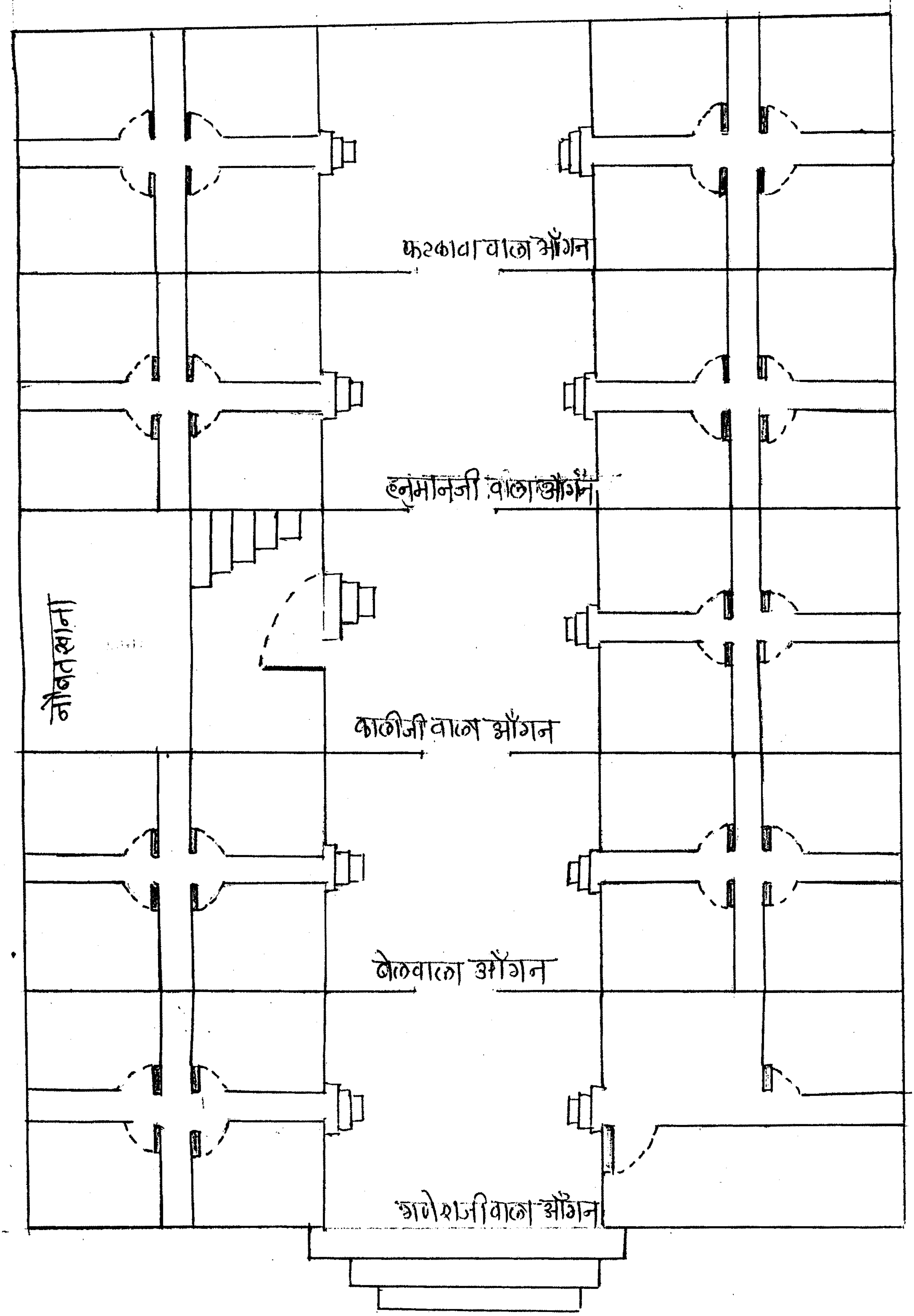

2.4 संयुक्त परिवार :

मिश्र जी ने 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में संयुक्त और एकल परिवार का चित्रण किया है। संयुक्त परिवार को चित्रित करते समय पाँच पीढ़ियों का वास्तविक यथार्थ और आदर्श चित्रण उन्होंने किया है किंतु उपन्यास के नायक के रूप में राजन को देखा जा सकता है। क्यों कि कथावस्तु राजन के इर्द-गिर्द ही घूमती हुअी नजर आती है और उसीके अंत से खत्म होती है। राजन के बचपन से लेकर उसके बुढ़े होने तक उसके जीवन में आए हुए पारिवारिक सदस्यों की पीछली जिंदगी का ऐतिहासिक चित्रण मिश्र जी ने किया है। संयुक्त और इकट्ठा रहनेवाले परिवार के सदस्यों के जीवन का पन्ना मिश्रजी धीरे-धीरे पलटते है।

राजन के विवाह के बाद राजन का अपना परिवार बनता है। जिसमें उसकी पत्नी रम्मों, बंटू, बिट्टो और छोटू आदि हैं। इन पाँच लोंगों का 'पांच आँगनों वाला' घर बन जाता है जो पाँच लोंगो तक ही सीमित रहता है। राजन के परिवार के सदस्यों से, उनके बर्ताव से कथानक का विस्तार होता दिखायी देता है।

राजन की दादी जोगेश्वरी ससुराल को मायके की तरह बनाना चाहती है। इसलिए पति के गुजरने के बाद भी अपने परिवार को बनाए रखने के लिए अंत तक प्रयास करती रहती है। राजन के पिता राधेलाल संयुक्त परिवार को चिरंतन बनाए रखने के लिए अंत तक जूटे रहते हैं।

2.5 पारिवारिक वातावरण :

'पाँच आँगनोंवाले घर' में परिवार के सभी लोग एक साथ रहतें थे। सभी तरह के सुख-दुःख मिल बाँट लेते थें। घर में कोई कार्य हों, त्योंहार हों, या किसी तरह की कोई अप्रिय घटना सभी जगह एकजूट थी। घर के लोग घर की प्रमुख सदस्या जोगेश्वरी का कहा अक्सर मानते थें, कोई भी उसके विरोध में नहीं जाता था। हर सुबह पूजा पाठ उस घर में होता रहता। इसका वर्णन मिश्र जी ने चित्रात्मक शैली में किया है -

"हनुमान जी वाले आँगन में रामलीला होती थी। और बेलवाले आँगन में कोठेवाली का नाच। बैठक खाना या आँगन ... ऐसे मौकों पर कन्दीलों की रोशनी भर जातें। कभी-कभी नौंटकी भी होती थी पर वह घर के बाहर, बड़ बाबा के नीचे चबूतरे पर

बिछे कालीनों पर मोहल्ले के बड़े-बूढ़े बैठते, बैठकखाने में चिक डालकर औरतें। तीनों ओर से चबूतरें को घेरकर खड़े हो जाते पूरे मोहल्ले-भर के लौंडे-लपाड़ी। सारा मोहल्ला घर के सामने की गली में उतर आता।''[8]

पाँच आँगनों वाले घर में परिवार के सदस्य मिल-जुलकर सभी सुखों का आनंद लेते थें। एक दुसरे का सम्मान करते थें। सभी लोगों का खाना इकट्ठे ही बनता था। इसका मिश्रजी ने जो वर्णन किया है वह इस प्रकार है - ''पूरे घर का चूल्हा एक था। जिसमें कोई सौ लोगों का रवाना रोज बनता ही था। बेलनें और सेंकने के लिए दो-दो औरतों की पारी बँधी हुई थी। कामों के कम-बढ़ होने को लेकर औरतों के थोड़े-बहुत तनाव चलते रहते थे, लेकिन वे बहुत तूल नहीं पकड़ पाते थे। इसलिए भी कि जोगेश्वरी एक कुशल बैंक मैनेंजर की तरह औरतों की ड्युटियाँ बदलती रहती।''[9]

इससे पाँच आँगनों वाले घर में रहनेवाले सदस्यों को एक दूसरे से लगाव दिखायी देता है।

2.6 'पाँच आँगनों वाले घर' का खुशहाल जीवन :

पाँच आँगनोवाले घर के सभी सदस्य जोगेश्वरी और राधेलाल की पनाह में खुशहाल जीवन व्यतीत करते है। फला-फुला परिवार, एक दूसरे के प्रति लगाव, इकट्ठे रहते हुए सुख-दु:ख बाँटने की भावना। एकल परिवार के माहौल की ओर देखकर और खासकर त्योहारों के समय जो पारिवारिक खुशी मिलती थी इसका वर्णन मिश्रजी वास्तविकता से करते है - घर में खुशी के मौके पर शहनाई बजती, गाना बजाना होता, संक्रान्ति के दिनों में पतंग उड़ाना इसका मिश्र जी ने जो वर्णन किया है वह इस प्रकार है, ''संक्रान्ति तो खैर खास दिन था, दूसरें दिनों भी बच्चों के खेलकूद और दौड़-पदौड़ से घर में मेले का आलम बना रहता। एक गाना जो बच्चे अक्सर गाते थे - बनारसी कहलियत या बनारसी मस्ती का जो भी कहिए ....

''एतवार बड़ा अतवार, चर्खा कतवे का नाहीं
शनीचर बड़ा अनीचर, चर्खा कतवे का नाहीं''[10]

इस वर्णन से पारिवारिक खुशहाल जीवन का सारा चित्र हमारे सामने प्रस्तुत होता है। परिवार के सदस्य 'पाँच आँगनों वाले घर' की छाँव में रहकर जीवन में आनेवाले

खुशी के क्षणों की सौगात अपने अंदर समेट रहे हैं। मिश्र जी ने उपन्यास के कथानक को पात्रों के गुणानुसार और प्रसंगानुसार चित्रित किया है।

2.7 कथावस्तु का मध्य - दीवारें (1960 - 1975) :

शुरू-शुरू में एक साथ, इकठ्ठा रहनेवाले परिवार में धीरे-धीरे ऐसे दौर आने लगते है कि, पाँच आँगनों वाले घर की नींव हिलती हुई नजर आने लगती है।

उपन्यास में मिश्रजी ने कथावस्तु के मध्य में देश की स्वतंत्रता पूर्व स्थिति का वर्णन किया है। स्कूल में हेडमास्तर की फट्कार के बाद राजन अपने पिता को स्कूल में हुई घटना कथन करता है। राजन के मन में देश के प्रति आस्था देखकर राधेलाल के मन में देशप्रेम के भाव जागृत हो जाते हैं और देश के लिए कोई काम करने की भावना प्रबल हो उठती है। देशप्रेम राधेलाल के अंदर बार-बार उमड़ आने लगता है। उनका मानना ऐसा है कि माँ से भी पहले हमारे देश की जमीन है। एक विशेष जमीन से अलग नहीं हटाया जा सकता ''अगर गृहस्थ आदि होना कर्म है तो आजादी की लड़ाई में कूद पडना धर्म।''[11]

2.7.1 पारिवारिक विघटन का कारण -

राधेलाल देश कार्य करने लगते है। वे सुराजि बनकर अंग्रेजों के खिलाफ अपने क्रांतिकारी विचारोंको लिखते रहते हैं। एक रात हैडमास्तर स्मीथ उनकी गिरफ्तारीं की खबर देने आते हैं। किंतु गिरफ्तार होने से देश कार्य अधूरा रह सकता था इसलिए वह अंडरग्राऊंड हो जाते हैं।

अंडरग्राऊंड होने के बाद राधेलाल का ध्यान गृहस्थी से हट जाता है। जैसे-जैसे राधेलाल का परिवार से ध्यान हटने लगता है वैसे पारिवारिक विघटन होने लगता है। जोगेश्वरी अंत तक परिवार को जुटाए रखने की कोशिश करती है किंतु परिवार की नींव का हिलना 'पाँच आँगनों वाले घर' की दीवारों के टूटने का संकेत देती है।

2.7.2 टूटता हुआ परिवार -

राधेलाल के अंडरग्राऊंड होने के बाद 'पाँच आँगनों वाला घर' टूटने लगता है। आर्थिक विवंचना होने लगती है। जोगेश्वरी अपनी तरफ से बहुत कोशिश करती है। किंतु राधेलाल जैसी पारिवारिक जिम्मेदारी लेने के लिए कोई सक्षम नहीं लगता है। घनश्याम

और बाँके पारिवारिक जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार नहीं होते हैं। सन्नी घर छोड़कर चला जाता है। परिवार में बेबनाव होने लगता है। परिवार ढेर सारे लोगों से एक ही व्यक्ति तक सिमटने लगता हैं। पाँच आँगनों वाले घर में दीवारें खड़ी होने लगती हैं और एक आँगन में रहनेवाला परिवार अब कई टुकडों में बँट जाता है। जोगेश्वरी और राधेलाल की मृत्यु परिवार को तहस नहस करती है।

2.8 स्त्रियों की भूमिका :

2.8.1 जोगेश्वरी -

'पाँच आँगनों वाले घर' में परिवार को बनाए रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण पात्र के रूप में जोगेश्वरी दिखायी देती है। अपने पती की मृत्यु के बाद भी वह अपने एकल परिवार के सुख और खुशहाली के लिए जुटी रहती है। किसी भी समस्या का हल स्वंय ढूँढ लेती है और घर परिवार में समतोल बनाए रखती है। राधेलाल का सुराजी बनकर घर की जिम्मेदारियोंसे मुकर जाना, सन्नी का घर छोड़ भाग जाना तथा घनश्याम और बाँके के निठल्ले स्वभाव को भी वह झेल लेती है। अपनी सास की मृत्यु, बेटे की मृत्यु, सन्नी का घर छोड़ जाना और खुशहाल हरे-भरे परिवार को बिखरता देखती है। पारिवारिक चिन्ता के कारण ही अंत में उसकी मृत्यु हो जाती है।

2.8.2 शांतिदेवी -

राधेलाल की पत्नी है शांतिदेवी, स्वभाव से सरल, सुंदर और सुशील है। बड़े घर की होने के बावजुद ससुराल के तौर तरीके अपना लेती है। पति और सास के विचारों से चलती है। सास के जिंदा होने तक घर गृहस्थी की जिम्मेदारी की कोई भी बात उसे सोचनी नहीं पडती है। सास और पति के गुजरने के बाद और अपने देवरों के मुकर जाने के बाद वह घर गृहस्थी के बारें में सोच विचार करने लगती है। पिता समान गोवर्द्धन की बातों को संमझकर नौकरी के लिए अपने बेटे मोहन को दूसरे शहर भेज देती है।

मोहन और राजन के होते हुए भी वह श्याम के घर में ही अंत तक रहना पसंद करती है। शांतिदेवी हिंदू धर्म संस्कार और रीतिरिवाज को निभानेवाली भारतीय स्त्री है।

2.8.3 **रम्मो -**

रम्मो राजन की पत्नी है। वह संयुक्त परिवार में रहने के लिए तैयार नहीं है। सास देवर, देवरानी, जेठानी के साथ रहना उसे गँवारा नहीं है किंतु अपने पति और अपने बच्चों की जिम्मेदारी आत्मीयता से निभाती है। बेटे का विदेश चले जाना उसके दु:ख का बहुत बड़ा कारण बन जाता है। उसे रोकने की वह पुरी कोशिश करती है।

2.8.4 **ओमी -**

मोहन की पत्नी ओमी अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए सदैव तत्पर रहती है। राजन की पढ़ाई और उसकी शादी होने तक वह अपना कर्तव्य निभाती है। इतना ही नहीं बल्कि राजन की शादी अपनी छोटी बहन स्नेह के साथ करने की मंशा रखती है। ताकि संयुक्त परिवार को बिगड़ने न दे। पति मोहन का हर कहा वह मानती हैं। किसी भी बात के लिए या किसी चमक दमक को देख वह हठ या झगड़े जैसी बात नहीं करती। पति का सुख अपना सुख मानकर घर परिवार की जिम्मेदारी लेती है।

2.8.5 **कमलाबाई -**

कमलाबाई तवायफ है, किंतु राधेलाल के परिवार का भला चाहने वाली है। उस परिवार के साथ उसका अजीब सा किंतु गहरा रिश्ता है। कठिन समय पर वह उस परिवार की मदद करती है और उस परिवार को बनाए रखती है।

2.8.6 **नइकी चाची -**

नइकी चाची मतलब बाँके की पत्नी शिवपुरी वाली। वह नई-नई आयी है इसलिए बच्चे उसे नइकी चाची कहते हैं। नइकी चाची घर के सदस्यों से खास कर बड़े लोगों को बच्चे अगर कुछ कहते हैं। तो वह उन्हें टोक देती है।

परिवार बनता है स्त्रियों से परंतु कभी-कभी परिवार को बिगड़ने के लिए भी स्त्रियाँ ही जिम्मेदार होती हैं। किंतु पाँच आँगनों वाले घर की स्त्रियाँ अपने परिवार को बनाए रखने के लिए, भारतीय सभ्यता और संस्कृति को चिरंतन रखने के लिए प्रयास करती हुयी दिखाई देती है।

2.9 बुजुर्गों के प्रति आस्था / अनास्था :

मिश्र जी ने पूरे परिवार का वास्तविक चित्रण किया है। 'पाँच आँगनों वाला घर' उपन्यास के 'दीवारें' इस विभाग में उन्होंने सन 1960 से 1975 तक के दौर को चित्रित किया है। राजन की पीढ़ी तक बुजुर्गों के प्रति आस्था, लगाव दिखायी देता है। राजन अपने पिताजी की हर बात मानता है। राजन पर अपने पिताजी के व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव है। तो मोहन अपने पिता की तरह घर की सारी जिम्मेदारी ले लेता है। मोहन श्याम और राजन अपनी माँ के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहते है।

राजन की पीढ़ी तक माता-पिता का सम्मान आत्मीयता से होता था। राजन की पीढ़ी तक हिन्दू संस्कार और एकल परिवार नजर आता है। रम्मो भी अपने माता-पिता का आदर करती है।

नई पीढ़ी में बुजुर्गों के प्रति ऐसी कोई भावना नजर नहीं आती है कि जो बुजुर्गों के हित की हो। जिससे कि घर परिवार को बनाए रखें। खासकर राजन के परिवार में, राजन का बेटा, बंटू अपना कैरियर करने के लिए अमरिका चला जाता है। बिट्टो का मन भी अपने माता-पिता के प्रति आस्था रखनेवाला नहीं है। सबसे छोटा बेटा है छोटू। उसके लिए तो माता पिता पैसे के अलावा मायने नहीं रखते हैं। उसकी शादी को लेकर राजन और रम्मो चिंतित रहते हैं। शादी के बाद उसकी सारी बूरी आदतें छूट जाएगी इसलिए राजन अक्सर उसे समझाता है किंतु उसके अपने नुकसें कुछ अलग ही रहते हैं इस संबंध में गोविंद मिश्रजी ने लिखा है - "कितने मौके ऐसे आए जब राजन और रम्मो दोनों पस्त पड़ गए। लगा जैसे छोटू सिर्फ चक्कर खिला रहा था। विवाह करने का उसका इरादा था ही नहीं, माँ बाप को खुश करने के लिए वह कुछ करें ऐसी उसकी मंशा तो दूर-दूर तक नहीं थी।"[12]

नई पीढ़ी में माँ-बाप के प्रति अनास्था दिखायी देती है।

2.10 कथावस्तु का अंतिम हिस्सा (1980-1990) 'अन्धीगली' :

2.10.1 पारिवारिक भेद, नई पीढ़ी में बेबनाव -

सन 1980 से 1990 तक के दौर में मिश्रजी ने राजन के पाँच लोगों से बने घर परिवार का चित्रण किया है। राजन के बच्चों के बड़े होने के बाद का चित्रण है। राजन का

परिवार पाँच आँगनों वाले बनारस में स्थित घर से अलग रहता था। वैसे तो राधेलाल का सारा का सारा परिवार पाँच आँगनों वाला घर छोड़कर दूसरे शहर में जा बसा था। राजन के परिवार के बार में मिश्र जी लिखते है - ''वक्त में परिवर्तन हो गया था। कहा जाए तो पाँच आँगनों वाला घर अब भी था, पर अब तो पाँच आंगन थें राजन, रम्मो, बंटू, बिट्टो और छोटू के।''[13]

राजन अपनी माँ शांतीदेवी की चाहकर भी देखभाल नहीं कर सकता है। क्योंकि उसकी पत्नी के सामने उसकी एक नहीं चलती। राजन का बेटा बंटू एलिस के साथ कैरियर करने के लिए विदेश जाना चाहता है। एक ही परिवार में रहने के बावजूद परिवार में बेबनाव नजर आता है। तो बनारस के उस पाँच आँगनों वाले घर में मत-भेद होने लगते हैं। इसी प्रकार पारिवारिक त्रासदी और परिवार में संघर्ष ही दिखायी देने लगता है। सभी अपने-अपने विचारों से चलना चाहते हैं। उनका अपना ही रवैय्या होता है। हर कोई अपनी इच्छा के लिए स्वार्थ को अपनाते है। एकल परिवार की आत्मीयता चूर-चूर हो जाती है। परिवार खण्डित होने लगता है।

2.10.2 **पाश्चात्यों का अनुकरण -**

'पाँच आँगनों वाले घर' का कथानक राजन के आसपास ही घूमता रहता है। राजन के परिवार में उसके दो बेटे है। बंटू और छोटू पाश्चात्यों के प्रभाव में आकर पश्चिमी सभ्यता के अनुसार रहना पसंद करते है। मिश्रजी ने इस बारे में लिखा हैं। ''बंबई पहुँचकर बंटू में एक नई बात आई है - विदेश के लिए मोहीयों तो तीनों बच्चों पर पश्चिमी रंग चढा हुआ है, लेकिन बंटू में कुछ ज्यादा दिखता है, शायद इसलिए कि उसमें महत्वाकांक्षा भी है जो आज विदेश में ही अपनी तृप्ति देखती है।''[14] पश्चिमी संगीत, पश्चिमी रहन-सहन और पश्चिमी तौर तरीके अपनाकर जीना चाहता है। बंटू माता पिता को समझाता है और एलिस के साथ अमरिका चला जाता है। बिट्टों पर भी पाश्चातों का गहरा प्रभाव दिखायी देता है। बिट्टो के विदेशी आकर्षण के बारे में मिश्रजी लिखते हैं वह उपर उपर उड़ती हैं, सहेलियों से भी उपर-उपर की बातें करेगी वही -, वाओ .... ओं शिट ! ओ रियली ? बस दो चार शब्दों के सहारे अंग्रेजिएत झाडते हुए पाश्चातों के अनुकरण से राजन के तीनों बेटे-बिगड़ जाते हैं और उससे भारतीय सभ्यता टूटती हुई नजर आती है।

2.11 संयुक्त परिवार का अंत :

राधेलाल और जोगेश्वरी की मृत्यु के बाद सबसे प्रथम पाँच आँगनों वाले घर की नींव हिलने लगती है। बाद में सन्नी का घर छोड़ कर चले जाना, घनश्याम और बाँके का परिवार से अलग रहने की बात, ये सभी बातें जैसे - जैसे घटित होने लगती हैं वैसे-वैसे धीरे-धीरे पाँच आँगनों वाले घर की दीवारे भी हिलने लगती है। फलाँ फूला, हँसता-खेलता परिवार बँट जाता है। परिवार में बिखराव आता है और उसका अंत होता नजर आने लगता है।

राजन के परिवार की कहानी को मिश्र जी ने चित्रित किया है, राजन के परिवार में राजन को लेकर पाँच व्यक्तियों का जो घर है वह भी आप मतलबी स्वभाव के कारण, महत्वाकांक्षा के कारण, पाश्चातों के प्रभाव के कारण और पश्चिमी नशे में धूत् होने के कारण टूटता नजर आता है। राजन की तबियत बिगड़ जाती है रम्मो बंटू को भारत आने का आग्रह करती है, वह इतना भी कहती है, कि बड़े बेटे का होना कितना जरुरी है। मिश्र जी लिखते हैं - "डॉक्टर कहते हैं .... भगवान न करें कुछ हो बड़े लड़के को बुला लो तैयारी रखों उन्होंने कहा ...."

मम्मी ! ये हिन्दुस्तानी डॉक्टर ऐसे ही डराया करते है, अपनी इम्पोर्टेंस के लिए। साइंस बहुत ही आगे आ गई है। कुछ नहीं होनेवाला। मेरी एक जरुरी कानफ्रेंस है। मेरा कैरियर इस पर डिपैंडेट है। मैं अभी नहीं निकल सकता। छोटू है ही।"[15]

इससे बंटू का अपनी माँ के प्रति जो दुर्व्यवहार नजर आता है, बंटू बेहद आपमतलबी दिखायी देता है। अपने पिता की मृत्यु का दु:ख उसे जरा भी नहीं होता है। नई पीढ़ियों में यह बात आज भी दिखायी देती है। अपने माता-पिता के प्रति उन्हें कोई जिम्मेदारी नजर नहीं आती है। किंतु वही बेटे जब बुढ़े होते हैं। तो उन्हें भी इस बात का एहसास होने लगता है।

संयुक्त परिवार का अंत त्रासदी में हुआ है। वह दु:खान्त है। मिश्र जी पर पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव दिखायी देता है।

निष्कर्ष :

इस उपन्यास में मिश्र जी ने मनुष्य समाज के पारिवारिक जीवन को चित्रित किया है। मिश्रजी लिखित 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यस का अनुशीलन करने के लिए कथानक की ओर देखने से ऐसा लगता है कि यह भारतीय सभ्यता और संस्कृति के टूटते परिवेश को दिखाता है। प्राचीन भारतीय सभ्यता में एकल और संयुक्त परिवार का जो महत्व रहता था वह आधुनिक समाज में पश्चिमी अनुकरण के कारण कम होता नजर आ रहा है। सन 1940 से लेकर 1990 तक के इस पचास सालों के काल का संयुक्त परिवारका पाँच पीढ़ियों का और धीरे-धीरे उसके बिखराव का मिश्र जी ने वास्तविक और यथार्थ चित्रण किया है।

मिश्रजी लिखित इस उपन्यास में चित्रात्मकता, भावात्मकता, आँचलिकता, संवेदनशीलता, सामाजिकता, और प्रासंगिकता नजर आती है। आपने मनुष्य समाज के परिवारिक जीवन को समग्रता के साथ प्रस्तुत किया है। धर्म, परंपरा, संस्कृति, राष्ट्रप्रेम, पारिवारिक आस्था-अनास्था, विदेशी आकर्षण, स्वतंत्र विचार शैली के कारण पारिवारिक जिम्मेदारी के प्रति दुर्लक्षित नई पीढ़ी आदि बातों की ओर सूक्ष्मता से ध्यान दिया है।

मिश्र जी के 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में कथा-विस्तार पात्रों के और प्रसंगों के अनुसार होता नजर आता है। पात्रों की सोच के साथ कथानक बढ़ता हुआ नजर आता है। पाँच पीढ़ियों के व्यक्ति के चरित्र को मिश्र जी ने चित्रित किया है। समय के साथ-साथ संयुक्त परिवार में आनेवाली त्रासदी को चित्रित किया है।

कथानक का इतना विस्तार और पाँच पीढ़ियों का सचित्र संघर्ष ही इस उपन्यास में हुआ है।

* * * *

संदर्भ

क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	पृष्ठ सं.
1	Prof. Katherine Lever	The Novel and the Reader	16
2	डॉ.त्रिभुवन सिंह	हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग	9
3	डॉ.त्रिभुवन सिंह	- वही -	289
4	डॉ.त्रिभुवन सिंह	हिन्दी उपन्यासशिल्प और प्रयोग	397
5	सं.डॉ.उर्मिला शिरीष डॉ.रामजी तिवारी	छटपटाती नैतिकता की कथा 'पाँच आँगनों वाला घर'	73
6	डॉ.सरोजनी त्रिपाठी	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में वस्तु विन्यास	70
7	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	6
8	वही	वही	9
9	वही	वही	7
10	वही	वही	13
11	वही	वही	21
12	वही	वही	141
13	वही	वही	81
14	वही	वही	112
15	वही	वही	163